

विचार बिन्दु

फल की इच्छा छोड़कर निरंतर कर्तव्य करो। जो फल की अभिलाषा छोड़कर कर्तव्य करते हैं, उन्हें अवश्य मोक्ष प्राप्त होता है। -गीता

कैवल्योन्मुख योग से स्वास्थ्योन्मुख योग का अर्थशास्त्र

योग मोक्ष का प्रवर्तक है। किन्तु अनेक बीमारियों से जुड़ा रहे समकालीन विश्व ने अपनी सुविधा से कैवल्योन्मुख योग को स्वास्थ्योन्मुख योग बना लिया है। आज की चर्चा इसी पर केंद्रित है। यहाँ प्रारम्भ में ही यह बात देना उपयोगी है कि कैवल्योन्मुख योग या स्वास्थ्योन्मुख योग, योग विज्ञान और वैश्विक कल्याण का बीज है। रोचक बात यह भी है कैवल्योन्मुख योग की स्वास्थ्योन्मुखता साधु-संतों व व्यापारियों के लिये आज आर्थिक चरदान हो गयी है। समकालीन विश्व में अनेक साधु-संतों की व्यापारिक सफलता का राज योग की स्वास्थ्योन्मुखता में छिपा है। प्राचीन भारतीय मनीषियों ने योग पर बहुत कुछ समझा और लिखा है। इनमें सबसे महत्वपूर्ण कार्य महर्षि पतंजलि का है। पतंजलि योगसूत्र में योग के समस्त सिद्धान्तों, दर्शनों और अभ्यास का सूत्रीकरण है। भारत में योग के उद्भव के प्रमाण लगभग तीन हजार वर्ष ईसा पूर्व से मिलते हैं। इसके पश्चात् योग का संदर्भ उपनिषदों, जिनका समयकाल प्रायः 500 से 600 ईसा पूर्व माना जाता है, में मिलता है। महाभारत के उस अंश जिसे गीता कहा जाता है, और जिसका समयकाल ईसा के 400 वर्ष पूर्व से लेकर कुछ बाद तक माना जाता है, में योग पर गंभीर चर्चा की गई है। इन विविध संदर्भों को समाहित करते हुये एवं तत्समय में प्रचलित भारत के अनुभवजन्य-ज्ञान को पतंजलि ने 200 से 300 वर्ष ईसा पूर्व योगसूत्र की रचना की। बाद के वर्षों में 1950 से लेकर 1980 के दशक तक अनेक भारतीय योग शिक्षकों ने योग को पश्चिमी देशों में पहुँचाया। योग का मूल शरीर, मन, और आत्मा के योग, और इन सबका ब्रह्म के साथ योग को लेकर है। हालाँकि योग पर हमारे आधुनिक दृष्टिकोण ने इसे मात्र शारीरिक-मानसिक व्यायाम व स्वसन क्रिया मान लिया है। पतंजलि योगसूत्र के अनुसार योग के आठ अंग बताये गये हैं: यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। महर्षि पतंजलि ने योग को चित्त की वृत्तियों के निरोध के रूप में परिभाषित करते हुये 196 सूत्रों के माध्यम से अंततः कैवल्य का मार्ग दिखाया है।

योग के प्रथम पांच अंग अर्थात्, यम, नियम, आसन, प्राणायाम तथा प्रत्याहार बहिरंग और बाकी तीन अंग धारणा, ध्यान, समाधि अंतरंग नाम से जाने जाते हैं। जब तक आप बहिरंग साधना को नहीं साध लेते तब तक अंतरंग साधना प्राप्त नहीं हो सकती। यम में पांच प्रकार यथा अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, और अपरिग्रह शामिल हैं। नियम में भी पांच प्रकार यथा शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रीति शामिल हैं। आसन का अर्थ उस देवस्थिता से है जो सुखदायी हो। आसन लग जाने पर श्वास प्रश्वास की गति के विच्छेद के अभ्यास को ही प्राणायाम कहा जाता है। जहाँ एक ओर आसन देह के स्थिरता की साधना है वहीं दूसरी ओर प्राणायाम प्राणों के स्थिरता की साधना है। देह और प्राण की स्थिरता के बिना मन की स्थिरता, जो योग के अंतिम तीन अंगों से प्राप्त की जाती है, संभव नहीं है। प्रत्याहार वास्तव में प्राण और मन की स्थिरता के बीच सेतु का काम करता है। देहस्थीय और प्राणस्थीय से इंद्रियों बाहरी विषयों से हटकर अंतर्मुखी हो जाती हैं, इसे प्रत्याहार कहा जाता है। बहिर्मुखी गति के निरोध से अंतर्मुखी होकर मनस्थीय की चेष्टा को धारणा कहा जाता है। ध्यान इसके आगे की अवस्था है और ध्यान से आगे परमानंद की अवस्था ही समाधि है।

अष्टांग योग या आठ अंगों वाला योग वस्तुतः आठ आयामों वाला मार्ग है, जिसमें आठों आयामों का अभ्यास एक साथ किया जाता है। इनमें यम सार्वभौमिक मूल्यों पर, नियम व्यक्तिगत मूल्यों पर, आसन विभिन्न प्रकार की शारीरिक मुद्राओं और व्यायामों पर, प्राणायाम स्वसन और प्राण पर नियंत्रण, प्रत्याहार चेतनता पर नियंत्रण, धारणा एकाग्रता से सम्बंधित, ध्यान मन की स्थिरता से सम्बंधित एवं समाधि परमानन्द से संबंधित है। अपने मूल स्वरूप में अष्टांग योग के आठों अंग आपस में संबंधित हैं और एक दूसरे से पृथक् नहीं हैं।

योग और आयुर्वेद के मूल उद्देश्य में अंतर और साम्य को एक साथ साधते हुये महर्षि चरक ने स्वयं स्पष्ट किया है कि आयुर्वेद का उद्देश्य स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा और पीड़ित व्यक्ति के विकास का शमन है, जबकि, योग व मोक्ष में वेदनायें नहीं, मोक्ष होने पर वेदनाओं से पूर्ण निवृत्ति हो जाती है, योग मोक्ष का प्रवर्तक है। शारीरिक दोष दैव-व्याप्राण्य व युक्ति व्याप्राण्य चिकित्सा से शांत हो जाते हैं। मानसिक दोष ज्ञान (आत्म-ज्ञान), विज्ञान (यथार्थ ज्ञान), धैर्य (चित्त की स्थिरता), स्मृति (अनुभूत का स्मरण), व समाधि (विषयों से मन हटाकर आत्मस्थ होना) से शांत हो जाते हैं। वस्तुतः बुद्धि, धैर्य व स्वयं की समझ मनोरोग की परम औषधि है।

योग का उद्देश्य मोक्ष व कैवल्य और आयुर्वेद का उद्देश्य स्वास्थ्य रक्षण व रोगशमन होने के बावजूद योग और आयुर्वेद का अटूट रिश्ता है। उत्तम स्वास्थ्य के बिना योग संभव नहीं है और आयुर्वेद के बिना उत्तम स्वास्थ्य संभव नहीं है।

नियम, आसन, प्राणायाम व ध्यान तथा आयुर्वेद के व्यायाम, आचार रसायन व स्वास्थ्यवृत्त शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य के संदर्भ में परस्पर समान और समरूप परिणामदायक हैं।

चरक संहिता में प्राणायाम की चर्चा न होने हुये भी प्राण-तत्व एवं उसका स्वास्थ्य व रोग के संदर्भ में गहन विश्लेषण मिलता है। योग और आयुर्वेद दोनों में ही रजोगुण, तमोगुण, और सतोगुण की भूमिका और पारस्परिक सम्बन्ध सर्वविदित हैं। योग अपनी समग्रता में कैवल्य की ओर ले जाता है, और कैवल्य प्राप्ति की यात्रा जरा-व्याधि पीड़ित शरीर और मन-स्थिति में संभव नहीं है। आयुर्वेद के द्वारा जरा-व्याधि मुक्त शरीर और मस्तिष्क पाया जा सकता है जिसमें दोष, अग्नि, धातु, मलक्रिया सम हों तथा आत्मा, इन्द्रियाँ व मन प्रसन्न हों। योग व आयुर्वेद की जुगलबंदी स्वास्थ्य, सम्पदा व सुख के रूप में पुनर्प्राप्ति कैवल्य देने में समर्थ है।

आज पूरी दुनिया में जिस योग की धूम मची है, वह योगसूत्र के महान रचनाकार महर्षि पतंजलि के आसन, प्राणायाम व ध्यान तथा आयुर्वेद के महान आचार्य महर्षि चरक द्वारा वर्णित व्यायाम और स्वस्थवृत्त का मिला-जुला स्वरूप है। योग व आयुर्वेद का तालमेल अब बाजार के घालमेल का अंग है। सामाजिक-आर्थिक सफलता के मानदंडों पर देखा जाये तो आज स्वास्थ्य, सम्पदा और सुख ही समकालीन विश्व के पुनर्प्राप्ति कैवल्य हैं। महर्षि चरक द्वारा वर्णित व्यायाम और महर्षि पतंजलि द्वारा वर्णित आसन, प्राणायाम व ध्यान का मेलजोल इस पुनर्प्राप्ति कैवल्य प्राप्त करने के सर्वोत्तम साधन के रूप में उभरा है। यही कारण है कि विश्व की प्रमुख शोध-पत्रिकाओं में योग और प्राणायाम पर आज तक हुई शोध के आधार पर लिखे गये 6300 से अधिक शोधपत्र कैवल्य नहीं बल्कि स्वास्थ्य को दृष्टिगत रखते हुये लिखे गये हैं। इसी प्रकार विविध प्रकार के व्यायाम और फिजिकल एक्सरसाइज पर लिखे गये 18000 से अधिक शोधपत्रों में भी स्वास्थ्य को ही आधार बनाया गया है। कैवल्य-प्राप्ति को किनारे करते हुये योग से योगी की यात्रा ने 56000 करोड़ रुपये का वैश्विक बाजार खड़ा कर दिया। इतिहास में ऐसा पहली बार हो रहा है कि समकालीन योगियों, संतों, और व्यापारियों की आर्थिक साक्षेदनी ने योग, आयुर्वेद और परचून का मिला-जुला ब्रॉड विकसित करते हुये विश्व में छपन हजार करोड़ रुपये या 80 बिलियन डॉलर का भारी-भरकम बाजार खड़ा करने में सफलता प्राप्त की है। सुख भोगने हेतु स्वस्थ रहने की उक्त वैश्विक लालसा ने योग व आयुर्वेद को नया आयाम दिया है।

हम सबके लिये इस तमाम चर्चा का महत्त्व यह है कि योग्य आयुर्वेदाचार्यों और योगाचार्यों की मदद से योग को हम अपनी दिनचर्या में अवश्य शामिल करें। आसन, प्राणायाम और ध्यान मानव के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करते हैं। योगिक क्रियाओं से कॉर्टिसोल में कमी, रक्तशर्करा में कमी, सिस्टोलिक और डायस्टोलिक रक्तचाप में कमी, हृदय स्वास्थ्य में बढ़ावा, उच्च रक्तचाप में कमी, कोरोनरी एन्थीरोसिस पर नियंत्रण, सीरम लिक्विड प्रोफाइल में सुधार, हृदय और श्वसन तंत्र की दक्षता में वृद्धि, मधुमेह में कमी, गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार, तनाव, चिन्ता और अवसाद में कमी, मूड में सुधार, और यहां तक की कैंसर से उबर रहे लोगों की जीवनी-शक्ति में भी सुधार होता है। वयोजुद्ध लोगों में योग शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक, एवं ओज में बेहदरी लाता है। योग फास्टिंग ग्लूकोज, लिपिड-प्रोफाइल तथा रक्तचाप में सुधार करता है। गर्भवती महिलाओं में योग चिन्ता व अवसाद को कम कर सकता है। युवाओं के लिये भी ध्यान क्यूरेटिव एवं प्रिवेन्टिव मानसिक-स्वास्थ्य के लिये उपयोगी है।

हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में हार्वर्ड स्कूल ऑफ़ पब्लिक हेल्थ के शोधकर्ताओं द्वारा योग पर आज तक हुई शोध के सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर वर्ष 2016 में प्रकाशित सिस्टेमेटिक-रिव्यू एवं रेण्डमाइज्ड कंट्रोल क्लीनिकल ट्रायल्स की मेटा-एनेलिसिस के निष्कर्ष यह स्पष्ट करते हैं कि योग करने वाले व्यक्तियों में बाँडीमॉस इन्डेक्स, सिस्टोलिक ब्लडप्रेसर, लो-डेंसिटीलिपोप्रोटीन कोलस्ट्रॉल व हाईडेंसिटीलिपो प्रोटीन कोलस्ट्रॉल के मानकों में सुधार होता है। इसके साथ ही शरीर के वजन पर डायस्टोलिक ब्लडप्रेसर टोटलकोलस्ट्रॉल ट्राइग्लिसराइड्स, व हृदय गति के मानकों में भी सुधार होता है। इस अध्ययन का निष्कर्ष यह था कि योग काडियो-मेटाबोलिक स्वास्थ्य को बेहतर करता है। विश्व के इन तमाम प्रमाणों को समाहित करते हुये यह निर्विवाद और सुस्पष्ट निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि योग मानव स्वास्थ्य में बेहदरी लाता है। योग कीजिये। योग: औषधम् (य.आ.सू. 1.1) का सिद्धान्त हमें सदैव स्वस्थ रखने में सहायक होगा।

-अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फॉरेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

कटीले फूल

● कोविंद के सामने 17 विपक्षी दलों ने मीरा कुमार को बनाया प्रत्याशी।
आम आदमी तो चुनाव से बाहर है, अधिकार तो केवल सांसद व विधायकों को ही मत डालने का। अमेरिका में जरूर हर आदमी का होता है राष्ट्रपति।
● डस्टबिन रखने के बाद बाजारों में सफाई।
दाद तो महापौर की को है जो जयपुर शहर में नेता नांगलों से भी ज्यादा काम करके दिखा दिया।

अब तो यातायात पुलिस की सही व्यवस्था की प्रशंसा हो रही है। पर अभी सुधार और बाकी है।
● सरकारी आवास खाली कराने के लिए प्राथना पत्र पेश।
कहीं कुर्सी की आपाधापी है तो कहीं आवास की आपाधापी।
● जेब्रा क्रॉसिंग पार की तो महंगा पड़ेगा।
यही तो एक्सपर्ट होता है जब क्रॉसिंग पार करते लाल बत्ती अचानक जल उठती है।

चिटफंड कम्पनी के निदेशक व एजेंट ने लोगों से ऍंठे करोड़ों रुपये

डूंगरपुर, (निस)। मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट न्यायालय में दायर वाद के आधार पर कोतवाली पुलिस ने विनर्स रॉयल मैनेजमेंट सर्विस इंडिया लिमिटेड एवं विनर्स रॉयल वर्षा क्रेडिट कॉ-आपरेटिव सोसायटी के निदेशक एवं स्थानीय एजेंट के खिलाफ खालाधारकों के पैसे लेकर फरार हो जाने के मामले में धोखाधड़ी का प्रकरण शनिवार को दर्जकर जांच प्रारंभ कर दी है। कोतवाली पुलिस के द्वितीय अधिकारी किशनलाल ने बताया कि करौली निवासी कालूराम बारोट पुत्र नाथु बारोट, माण्डवा नवाधारा निवासी, संग्राम पुत्र मोतीलाल परमार माथुगामड़ा निवासी, होमनाथ पुत्र थावरनाथ रावल जोगी, मूलचंद पुत्र मावजी ननोमा निवासी करौली तथा भेमनाथ पुत्र लालनूथ रावल जोगी निवासी भिण्डा ने मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट में चिटफंड कंपनी के डूंगरपुर



■ विनर्स रॉयल मैनेजमेंट, रॉयल क्रेडिट कॉ-आपरेटिव सोसायटी ने करोड़ों हड़पे
■ एफडीआर परिपक्व होने व भुगतान नहीं होने पर हुआ झांसे का खुलासा

शाखा के ब्रांच मैनेजर ईश्वरलाल पुत्र गोवर्धनलाल पाटीदार निवासी झलाप, विजेंद्र उबा पुत्र नेतराम उबा जाति कुमावत त्रिपुरा कॉलोनी, आकाशवाणी, दाहोद रोड, बांसवाड़ा तथा नेतराम उबा पुत्र

उदारामजी के खिलाफ ईनामी चिट एवं परिचालन स्कीम प्रोबेशन अधिनियम 1978 के तहत प्रकरण दर्ज करवाया।
प्रार्थियों ने बताया कि उक्त स्कीम को संचालित करने के लिए वर्ष 2008 में विजेंद्र व नेतराम डूंगरपुर आए थे और उन्होंने क्रेडिट सोसायटी के नाम से डूंगरपुर में विज्ञापन प्रकाशित करवा कर आमजन को अवगत कराया था कि उनके द्वारा स्कीमों में पैसे लगाने पर पांच साल में दुगुना कर के मासिक जमा करवाने, एफडीआर की स्कीमों पर लुभावनी योजनाएं डाली और इसी के तहत उनके द्वारा स्थानीय एजेंट के रूप में झलाप निवासी ईश्वरलाल पाटीदार के नियुक्त किया गया था।
योजना के शुभारंभ के पश्चात् फरियादियों से राशि लेने के लिए दोनों आरोपी वर्ष 2012 तक

नियमित रूप से आते रहे और स्थानीय एजेंट से राशि प्राप्त कर लेते थे। इसके तहत लगभग दस करोड़ रूपया एकत्रित करने के बाद झांसे का खुलासा जब हुआ तब 2014 में जिन खालाधारकों के एफडीआर पक गई थी और उन्हें भुगतान के लिए चक्कर काटने लगे तो फरियादियों ने कानूनी कार्यवाही की बात कही तो कोई जवाब देने से मना करने लगे, साथ ही उन्होंने परिपक्वता राशि देने से इंकार कर दिया।
इस तरह उन्होंने चिटफंड कम्पनी खोलकर क्षेत्र के कई खालाधारकों के करोड़ों रूपय हड़प लिये। प्रार्थियों के इस्तगाले के आधार पर न्यायालय ने अभियुक्तों के खिलाफ विभिन्न धाराओं में प्रकरण दर्ज करने के निदेश दिए। कोतवाली पुलिस ने शनिवार को तीनों अभियुक्तों के खिलाफ प्रकरण दर्जकर जांच प्रारंभ कर दी है।

श्रेष्ठ वशिष्ठ ने नीट में चाकसू का नाम रोशन किया

चाकसू (निस)। नीट 2017 के रिजल्ट में एक बार फिर चाकसू के लाल ने कमाल कर दिखाया है चाकसू के मूल रूप से रहने वाले श्रेष्ठ वशिष्ठ ने नीट 2017 के रिजल्ट में ऑल इंडिया लेवल पर 27 वीं रैंक एवं राजस्थान स्तर पर दूसरी रैंक हासिल कर अपना, अपने परिवार एवं चाकसू का नाम रोशन कर एक बार और खुशी का मौका प्राप्त किया है।

इससे पहले श्रेष्ठ ने ए आई आई



■ राजस्थान में दूसरी, इंडिया लेवल पर 27 वीं रैंक हासिल की

एम एस व जे आई पी एम ई आर की परीक्षाओं में भी श्रेष्ठ प्रदर्शन किया था इस पर श्रेष्ठ के माता-पिता सत्यनारायण शर्मा एवं ममता शर्मा को बहुत ही गर्व महसूस हुआ है।

श्रेष्ठ वशिष्ठ का कहना है कि उसने अपनी दादी कमला देवी का सपना पूरा करते हुए डॉक्टर बनने की पहली सीढ़ी पूरी की है कहता है कि उसके बड़े पापा डॉक्टर बनना चाहते थे लेकिन परिवारिक परिस्थिति के कारण वह डॉक्टर नहीं बन सके उनकी दादी कमला देवी का यह सपना था कि उनके परिवार से कोई डॉक्टर बने। श्रेष्ठ की बहन प्रतिष्ठा श्रेष्ठ कठिन समय में उसके साथ खड़ी रही। इसके लिए चाकसू के कई ब्राह्मण संगठनों के कार्यकर्ताओं ने श्रेष्ठ वशिष्ठ को बधाई दी है।

ज्ञानवाणी

स्कूली बस्ते का बोझ हल्का हो

आजकल बालकों पर स्कूली बस्ता दिन पर दिन भारी भरकम होता चला जा रहा है, जिससे नन्हें बच्चों की रीढ़ की हड्डी प्रभावित हो रही है तथा कंधे भी बैठते चले जा रहे हैं। इंग्लिश मीडियम स्कूलों द्वारा प्रथम स्टेजर्ड से ही भारी पाठ्यपुस्तकें, सजिबल कॉपियाँ व अनेक स्टेशनरी प्रस्तावित कर दी जाती हैं, अतः अभिभावकों को वैसी ही व्यवस्था करनी होती है। इसके अतिरिक्त स्कूल बैग में ही लंच बाक्स व पानी की बोतल भी रखनी होती है। इसके अतिरिक्त ड्राइंग बाॅक्स, कलर बाॅक्स, पेंसिल-रबर, प्रोजेक्टर सी रखने होते हैं।

परिणामतः स्कूली बस्ता 10 से 15 किलो तक वजन हो चला है, जो कि बालकों के शरीर, मन, इन्द्रियों को बुरी तरह झकझोर रहा है किन्तु स्कूल प्रबंधन स्वार्थवश अंधा बना हुआ बालकों के साथ क्रूर व्यवहार कर रहा है। कक्षा एलकेजी व यूकेजी व प्रथम स्टेजर्ड में बिना पुस्तकें स्कूल में एंकिटविटीज होनी चाहिए तथा खेलने-कूदने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध होने चाहिए ताकि बाल्यपन पूर्णरूपेण स्वस्थ रूप से व्यतीत हो।

परन्तु खेद है कि सभी स्कूलों के पास खेल मैदान नहीं, अतः बालकों का बाल्यपन ही उनसे छीना जा रहा है। शिक्षा अधिकारी मूक बन सब कुछ देख-सुन कर भी सब कुछ अनदेखा करे जा रहे हैं। कृपया स्कूली बस्तों का वजन हर हालत में हल्का कर बालकों के बचपन की रक्षा करें।

-एम.एल. शौकरिया, जयपुर (राज.)

राशिफल



पंडित अनिल शर्मा

रविवार 25 जून, 2017

आषाढ मास, शुक्ल पक्ष, द्वितीया तिथि, रविवार, विक्रम संवत् 2074, पुनर्वसु नक्षत्र, ध्रुव योग, बालव कण, चन्द्रमा आज सायं 6:01 पर कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-मिथुन, बुध-मिथुन, गुरु-कन्या, शुक-मेघ, शनि-वृश्चिक, राहु-सिंह, केतु-कुम्भ राशि में। आज पुनर्वसु नक्षत्र रात्रि 11:25 तक, ध्रुव योग सायं 5:57 तक है। इसके पश्चात् पुष्य नक्षत्र, व्याघात योग, कौलव करण आरम्भ होगा। आज त्रिपुंकर योग रात्रि 11:25 तक है।

सर्वाथ सिद्धि योग रात्रि 11:25 से आरम्भ होगा। रवि पुष्य योग रात्रि 11:25 सूर्योदय तक है। आज चन्द्र दर्शन, उत्तर श्रृंगोन्ति, रथयात्रा उत्सव, आषाढी दशहरा, मनोमासा द्वितीया है। आज जगदीश रथयात्रा जगन्नाथपुरी (उड़ीसा) है।
श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:21 से 9:04 तक, लाभ-अमृत 9:04 से 12:29 तक, शुभ 2:12 से 3:54 तक।
राहुकाल: 4:30 से 6:00 तक।

सीएचसी में गर्भवती ने फर्श पर ही दिया बच्चे को जन्म

लवाण, (निस)। उपखंड क्षेत्र के कस्बे लवाण में शुक्रवार की रात एक महिला ने डॉक्टर ना होने से अस्पताल में जमीन पर ही बच्चे को जन्म दिया। जानकारी के मुताबिक लवाण के सामुदायिक अस्पताल में रात के वक्त डॉक्टर ना होने से गर्भवती महिलाओं व परिवारवालों को कठिन समस्याओं से गुजरना पड़ा।

शुक्रवार की रात करीब 12 बजे मनभर देवी पत्नी बनवारी लाल सैनी निवासी मुमलाई, लवाण की डिलीवरी के लिये उसके परिवारजन उसे लवाण के सामुदायिक अस्पताल ले गये लेकिन जो महिला डॉक्टर की इयूटी तैनात थी वह इयूटी पर नहीं मिली। अस्पताल में डॉक्टर ना होने पर महिला को पती किया गया और महिला ने अस्पताल के फर्श पर ही साथ में गई महिलाओं की मदद से बच्चे को जन्म दे दिया।

इस संबंध में जब लवाण सामुदायिक अस्पताल के चिकित्सा प्रभारी सुरेन्द्र चौधरी से बात की तो



चाकसू के श्रेष्ठ वशिष्ठ ने नीट 2017 के रिजल्ट में इंडिया लेवल पर 27 वीं रैंक हासिल करने पर ब्राह्मण संगठनों ने उन्हें बधाई दी।

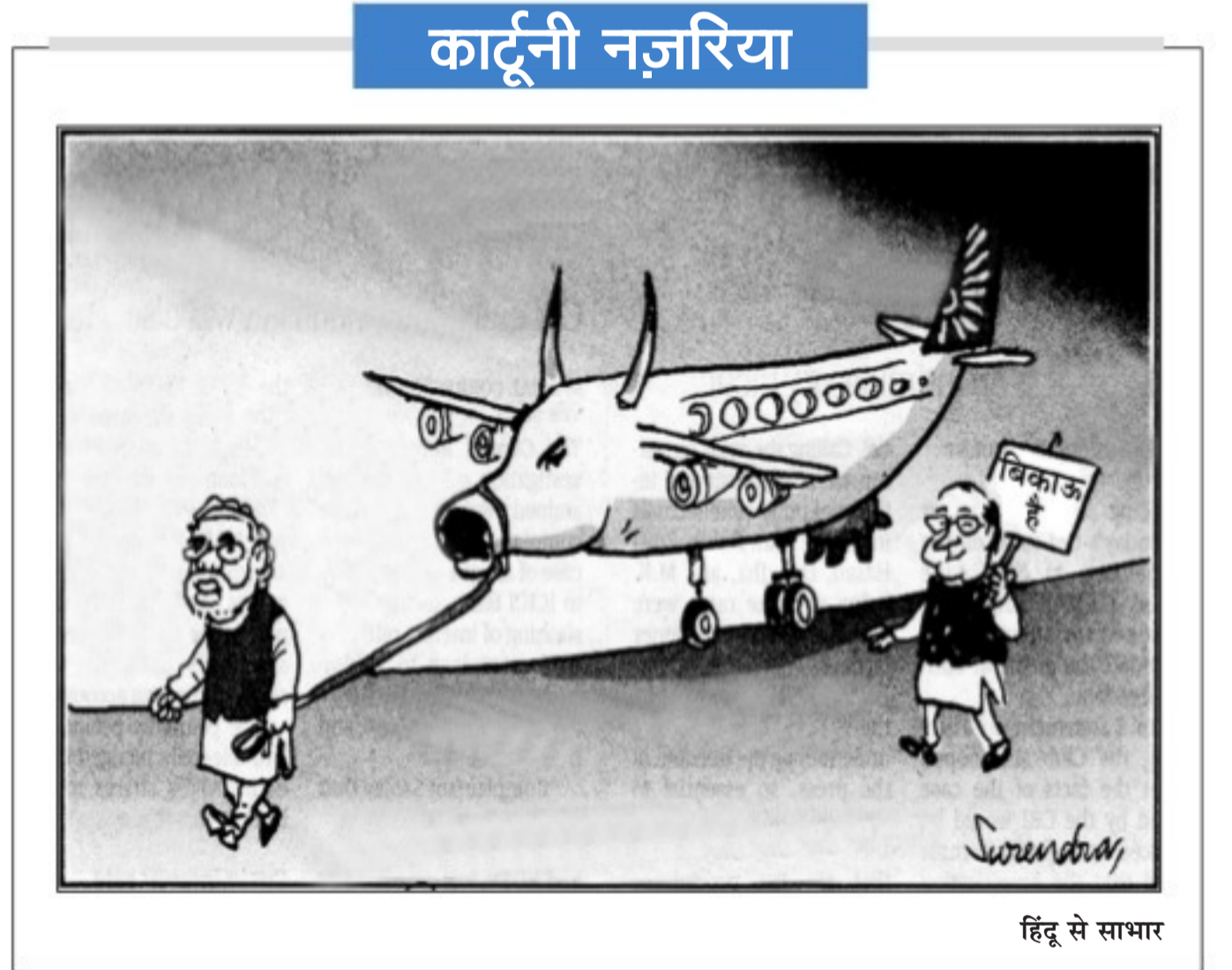
उन्होंने सालासर धाम में मनेोती का नारियल भी बांधा। पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने कहा कि मेरी बालाजी की प्रति गहरी आस्था है, और मैं 3 बार आया हूँ। इस दौरान मंदिर प्रवेश द्वार देवस्थान मंत्री राजकुमार रिणवा, सहकारिता मंत्री

असम सीएम ने सालासर बालाजी के दर्शन किये

अजय किलक, चुरू एसपी राहुल बारहट, कलेक्टर ललित गुप्ता, एसपी योगेन्द्र फौजदार, बीदासर एसडीएम संचु पारीक, तहसीलदार सुशील सैनी, बिहारी पुजारी, देवकीनन्दन पुजारी, यशोदाबदन पुजारी, मंगीलाल पुजारी, धर्मवीर पुजारी, रविशंकर पुजारी, बबलू पुजारी, अजय पुजारी, राकेश पुजारी, मनोज पुजारी, जीतमल शर्मा, भगवानाराम शर्मा, सहित पुजारी परिवार के सदस्यों ने उनका फूल मालाओं से स्वागत किया।

उन्होंने बताया कि रात को डॉ. ज्योति मीना की इयूटी थी जो अगले दिन सुबह 7 बजे अस्पताल में अपनी इयूटी पर आई। शनिवार सुबह 4 बजे मंजू पत्नी राकेश के परिजन भी लवाण के सामुदायिक अस्पताल में डिलीवरी के लिये पहुंचे लेकिन कर्मचारियों ने डॉक्टर ना होने से उन्हें दूसरे अस्पताल में जाने के लिये भेज दिया। पीड़ित मंजू को दौसा के किरीसी अस्पताल में जाकर डिलीवरी करवानी पड़ी।

कार्टूनी नज़रिया



हिंदू से साभार

मेघ	सिंह	धनु
नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। परिचितों के सहयोग से अटक हुए कार्य बन सकते हैं। परिचितों के सहयोग से अटक हुए कार्य बन सकते हैं।	आर्थिक मामलों से संतुलन बना रहेगा। आर्थिक कारणों से अटक हुए कार्य बनने लगेगा। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है।	घर-परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अटक हुए कार्य बनने लगेगा। आपसी सहयोग-समन्वय से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।
वृष	कन्या	मकर
मन:स्थिति ठीक रहेगी। आवश्यक कार्य सुगमता से बनने लगेगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। घर-परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।	अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से निपटाने का प्रयास करें। अटक हुए कार्य बनने लगेगा। नवीन कार्य के लिए दिन अच्छा है।	पिछले कुछ समय से बना हुआ मानसिक तनाव दूर होने लगेगा। मन में बना हुआ भय समाप्त होगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।
मिथुन	तुला	कुंभ
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा।	धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। धार्मिक कार्यों में आस्था बढ़ेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। परिवार में शुभ-मांगलिक संदेश प्राप्त होंगे।	घर-परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। खान-पान के मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।
कर्क	वृश्चिक	मीन
समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। अन्यायपूर्ण धन खर्च होगा। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। स्वास्थ्य के संबंध में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।	चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में ध्यान देना चाहिए। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।	परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आपसी सहयोग-समन्वय से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।